तमाम वेरिएंट के मुकाबले ज्यादा संक्रामक

भूलना नहीं चाहिए कि हमारे सामने दोहरी चुनौती है। महामारी की तीसरी लहर से तो हमें बचना ही है, बड़ी मुश्किलों के बाद खड़ी हुई अर्थव्यस्था को भी संभाले रखना है। साफ है कि हमें रस्सी पर संतुलन बनाए रखते हुए चलने का मुश्किल काम करना है।

नवीन पंडित।।

कोरोना वायरस के नए वेरिएंट ओमीक्रोन का दुनिया के कई देशों में फैलाव पहले से ही चिंता का कारण बना हुआ था, लेकिन भारत में भी इसके कुछ मामले मिलने के बाद स्थिति गंभीर हो गई है। गौर करने की बात है कि अभी भी वायरस के इस नए वेरिएंट को लेकर ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है। इतना जरूर है कि यह अब तक के तमाम वेरिएंट के मुकाबले ज्यादा संक्रामक है। इसलिए जिस तीसरी लहर के खतरे को टल गया माना जा रहा था,, वह वास्तविक रूप लेकर हमारे सामने आ खड़ा हुआ है। मगर अभी यह पता नहीं है कि अपने नए रूप में यह वायरस कितना घातक है। पूरी तरह वैक्सिनेशन के दायरे में आ चुके लोग भी इसका शिकार हो रहे हैं, इससे यह तो लगता है कि नया वेरिएंट टीकों के कवच को भेद सकता है, लेकिन इसे भेद कर शरीर तक पहुंचने के बाद इसकी कितनी ताकत बची रहती है और यह शरीर को वास्तव में कितना नुकसान पहुंचा सकता है, इसे लेकर कोई स्टडी अभी नहीं हुई है। आरंभिक मामलों में हलके लक्षण ही बताए जा रहे हैं। इसलिए अनावश्यक रूप से आशंकाएं पालने या अफवाहों के पचड़े में पड़ने से बेहतर है एक्सपर्ट्स की राय का इंतजार किया जाए। इस दौरान सावधानी तो पूरी बरती जानी चाहिए, लेकिन घबराहट में आकर फैसले लेने से बचना होगा।

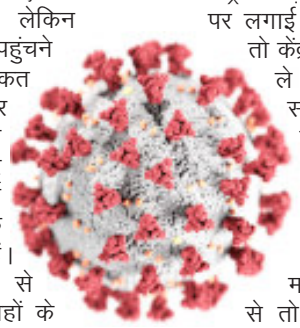

उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र में अंतरराष्ट्रीय उड़ानों से आने वाले यात्रियों पर लगाई गई अतिरिक्त पाबंदी यों तो केंद्र के दखल के बाद वापस ले ली गई है, लेकिन थोड़े समय के लिए ही सही इसने अनिश्चितता तो पैदा की। इससे बचा जाना चाहिए था। भूलना नहीं चाहिए कि हमारे सामने दोहरी चुनौती है। महामारी की तीसरी लहर से तो हमें बचना ही है, बड़ी मुश्किलों के बाद खड़ी हुई अर्थव्यस्था को भी संभाले रखना है। साल की दूसरी तिमाही यानी जुलाई से सितंबर की अवधि में जीडीपी के आंकड़े 2019 के उसी अवधि में दर्ज बढ़ोतरी दर को पार जरूर कर गए हैं, लेकिन अगर निजी खपत की और उन सेक्टरों की बात करें जिनमें प्रत्यक्ष संपर्क की जरूरत होती है, मिसाल के तौर पर ट्रेड और होटल की तो वहां ग्रोथ अभी भी महामारी से पहले यानी 2019 के स्तर से नीचे है। यानी इन सेक्टरों के दो साल पूरी तरह धुल–पुछ चुके हैं।

साफ है कि हमें रस्सी पर संतुलन बनाए रखते हुए चलने का मुश्किल काम करना है। न तो किसी तरह की असावधानी की गुंजाइश छोड़ सकते हैं और न ही अनावश्यक सख्ती की ओर बढ़ सकते हैं। ऐसे में सबसे ज्यादा अहम हो जाता है आम नागरिकों का सहयोग। अगर लोग अपने स्तर पर मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते रहें तो आधी जंग तो हम ऐसे ही जीत जाते हैं।

मानव धार्मिकता

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

मस्तिष्क की चुंबकीय उत्तेजना और एक संवेदना की उपस्थिति में या, इसके विपरीत, पार्किंसंस रोग वाले रोगियों में। एक प्रयोग में, ट्रांसक्रानियल मैग्नेटिक स्टिमुलेशन (टीएमएस) गैर–मिरगी वाले व्यक्तियों में सही टेम्पोरल लोब पर लागू होता है, जिसके परिणामस्वरूप उपस्थिति की भावना की रिपोर्ट होती है, जिसे कुछ लोगों ने धार्मिक रूप से वर्णित किया है (उदाहरण के लिए, भगवान या स्वर्गदूतों की उपस्थिति के रूप में)। वर्तमान न्यूरोइमेजिंग अध्ययन से पता चलता है कि धार्मिक राज्य और विश्वास मस्तिष्क गतिविधि के वितरण में पहचानने योग्य परिवर्तनों से जुड़े हैं। इन सभी जांचों से दार्शनिक और धार्मिक प्रश्नों का रास्ता खुलता है जैसे मानव धार्मिकता की प्रकृति क्या है? क्या धर्म जैविक या सांस्कृतिक विकास का उत्पाद है?

संपादकीय

मिले स्थायी रूप

भारत ने चीन पर दबाव बढ़ाने के लिए अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया से अपने रणनीतिक समीकरण क्वॉड को मजबूती दी है, लेकिन दूसरी तरफ क्वॉड विरोधी रूस से भी अपने सैन्य रिश्ते मजबूत किए हैं। बाकी तीन क्वॉड सहयोगियों की तरह चीन में जल्द ही होने जा रहे शीतकालीन ओलिंपिक के डिप्लोमैटिक बायकॉट जैसा कोई कदम भी हमने नहीं उठाया है। इससे एक बात तो तय है कि चीन से अपने रिश्तों को भारत आज भी काफी वजन देता है और सीमा की घटनाओं को इस पर हावी नहीं होने देना चाहता। इस भावना को समझते हुए चीन के नेताओं को भी एक कदम आगे आना चाहिए और दोनों देशों की फौजों के बीच सुरक्षित दूरी बनाने का इंतजाम करना चाहिए। चीनी मीडिया का रवैया ऐसा है कि सीमा पर अपनी नई स्थिति से एक कदम भी पीछे हटे बगैर यदि चीन–भारत व्यापार दिन–दूनी रात–चौगुनी रफ्तार से बढ़ रहा है तो उन्हें चिंता करने की जरूरत क्या है। सबसे अच्छा यह होगा कि अभी शुरू हुई हलचलों को अंतिम बिंदु तक ले जाया जाए और एक–दूसरे के दावों का सम्मान करते हुए पूरी भारत–चीन सीमा को एलएसी या एलओसी की हैसियत से आगे बढ़ाकर औपचारिक रूप से स्थायी शक्ल दी जाए।

विचित्र बात है कि हकीकत में ऐसा कुछ होने के बजाय भारतीय राजनीति और विदेश व्यापार के बीच कुछ और ही तरह की डिकपलिंग हमें अपने यहां देखने को मिल रही है।

व्यापार में बढ़ोतरी

लेखकः चंद्रभूषण।।

भारत–चीन रिश्तों में ऊपरी माहौल के उलट एक अलग ही तरह की 'डिकपलिंग' दिखाई पड़ रही है। मुहावरेदारी को छोड़ दें तो डिकपलिंग शब्द का इस्तेमाल रेलवे के दायरे में एक खास तरह की दुर्घटना के लिए होता है, जिसमें कुछ डिब्बे बाकी ट्रेन से या फिर इंजन से ही अलग होकर पीछे छूट जाते हैं। भारत और चीन की अर्थव्यवस्थाओं में 'कपलिंग' कब हुई, यह तो नहीं पता, लेकिन इनके बीच डिकपलिंग की चर्चा पूर्वी लद्दाख में हुए सीमित स्तर के सैन्य टकराव के बाद से लगातार जारी है। विचित्र बात है कि हकीकत में ऐसा कुछ होने के बजाय भारतीय राजनीति और विदेश व्यापार के बीच कुछ और ही तरह की डिकपलिंग हमें अपने यहां देखने को मिल रही है।

राजनीतिक बयानबाजी से लगता है कि कारोबारी मामलों में भारत सरकार चीन के साथ जबर्दस्त सख्ती बरत रही है, लेकिन दोनों देशों के आपसी व्यापार के आंकड़ों पर नजर डालें तो यहां आश्चर्यजनक तेजी दिखाई पड़ रही है। बीते साल के पहले दस महीनों में ही दोनों देशों का व्यापार 100 अरब डॉलर का आंकड़ा पार कर गया था। 1988 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी की चीन यात्रा के बाद से व्यापारिक रिश्ते सुधारने की लंबी कोशिशों के

बाद भी सन 2001 में भारत–चीन व्यापार 1.83 अरब डॉलर का ही हो पाया था। सदी के तीसरे दशक में इसको 100 अरब डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य 2010 में लिया गया था। बीते साल दस महीने के अंदर ही यह लक्ष्य हासिल कर लेने पर शायद दोनों देशों के प्रमुख व्यापारिक केंद्रों में जश्न मनाया जाता, लेकिन पूर्वी लद्दाख के तनाव ने इसकी नौबत नहीं आने दी।

ब्यौरे में जाएं तो नवंबर बीतने तक भारत से चीन को किए जाने वाले निर्यात में 38.5 फीसदी की और वहां से होने वाले आयात में 49 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई थी। 2020 की इसी अवधि की तुलना में कुल व्यापारिक वृद्धि 46.4 फीसदी की थी। कृषि और फार्मा सेक्टर में चीन से संदर्भित एक अच्छी बात यह हुई है कि वहां के लिए हमारा चावल निर्यात सिर्फ दो साल में 800 टन से बढ़कर 10 लाख टन हो गया है, जबकि डॉ. रेड्डीज लैबोरेट्रीज की कैंसर मेडिसिन्स को चीन का बहुत बड़ा बाजार मिल गया है।

सैन्य तनाव और व्यापारिक सहयोग का ऐसा सहमेल किन्हीं भी दो देशों में शायद ही कभी देखने को मिला हो, लेकिन भारत और चीन जितनी प्राचीन पड़ोसी सभ्यताएं भी दुनिया में और कहां हैं? तंग श्याओफिंग ने राजीव गांधी से अपनी मुलाकात में कहा था कि 'सीमा विवाद सुलझाने की जिम्मेदारी क्यों न हम आने वाली पीढ़ियों पर छोड़ दें, जो निश्चय ही हमसे ज्यादा समझदार होंगी।' ऐसे टकरावों को फ्रीजर में डालकर व्यापार पर ध्यान केंद्रित करने की नीति पिछले तीन दशकों में अच्छे नतीजे लेकर आई है। डोकलाम तनाव के बाद रिश्ते सुधारने के क्रम में 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शी चिनफिंग के बीच चेन्नई में हुई वार्ता में फैसला हुआ था कि दोनों देशों के प्रतिनिधिमंडलों की आपसी मुलाकात के कुल 70 आयोजन 2020 में होंगे। तब से अब तक दो साल हो चुके हैं, लेकिन इनमें से एक का भी संपन्न होना अभी बाकी है। व्यापारियों की पहल से कारोबार जरूर बढ़ रहा है, लेकिन बात तो तब है, जब यह बढ़त टिकाऊ हो।

सूडोकु नवताल-5329

सरल

	9				4			
8	4			6		9		5
5		6	8	2		3		
	1	5	6	3			9	7
3	6			9	7	1	4	
		1		4	8	7		6
9		4		7			2	1
			2				8	

सूडोकु नवताल -5328 का हल

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

8	5	4	7	3	2	6	1	9
6	7	1	9	5	4	3	2	8
2	9	3	8	6	1	7	5	4
4	3	9	2	1	7	8	6	5
5	6	2	3	8	9	4	7	1
7	1	8	6	4	5	9	3	2
3	2	6	5	9	8	1	4	7
9	4	7	1	2	6	5	8	3
1	8	5	4	7	3	2	9	6

अपना ब्लॉग

दोनों सेनाओं के बीच में नो मैन्स लैंड

मोहन। भारत–चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा पर नजर डालें तो दोनों देशों ने इसके इर्दगिर्द जितना इन्फ्रास्ट्रक्चर पिछले पांच वर्षों में खड़ा किया है, उतना शांतिकाल में शायद ही कभी किसी देश ने किया हो। जून 2020 में पता चला था कि पूर्वी लद्दाख में दस पैट्रोलिंग पॉइंट्स पर चीनी फौजें आगे बढ़ आई हैं। पिछले डेढ़ साल की वार्ताओं का कुल इतना ही नतीजा निकला है कि दो पॉइंट्स– पैंगोंग त्सो का उत्तरी किनारा और गोगरा–हॉटस्प्रिंग्स– पर दोनों सेनाओं के बीच में नो मैन्स लैंड बन गया है। बाकी पॉइन्ट्स पर हालात ज्यों के त्यों हैं और लद्दाख की पूरी नियंत्रण रेखा पर भारतीय सैनिकों की गश्त का दायरा सिकुड़ा हुआ है। चीन का रुख सीमाओं पर लगातार अपनी घुमंतू पशुचारी आबादी की नई बस्तियां बसाने और वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास मिसाइलों और हेलिपैड्स वाली फौजी छावनियां जमाने का दिख रहा है, जो तिब्बत और शिनच्यांग में उसकी दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है। इसके विपरीत भारत का नजरिया अभी के तनाव को एक फौरी गड़बड़ी मानने का ही रहा है, जिसे सुधार लेने के बाद यथास्थिति को वापस लौटाया जा सकता है।